दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश में प्रसारित हरियाणा का हिन्दी दैनिक

सत्यजय टाईम्स

हिन्दी दैनिक

वर्ष-12, अंक-134 मंगलवार 16 मई, 2023, पृष्ठ 8, मूल्य 2 रुपये (फरीदाबाद से प्रकाशित) प्रातःकालीन संस्करण

RNI NO HARHIN/2012/43543 Ph. 0129- 4042533, Email: sjtfaridabad@gmail.com @SatyajayT satyajaytimes

इतिहास विभाग ने किया संगोष्ठी का आयोजन

बल्लभगढ़, 15 मई, सत्यजय टाईम्स/गोपाल अरोड़ा। सोमवार को अग्रवाल कॉलेज के इतिहास विभाग द्वारा भारतीय समाज में समग्र संस्कृति की ऐतिहासिकता विषय पर एक-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन प्राचार्य डॉ. कृष्णकांत गुप्ता जी के कुशल मार्गदर्शन व नेतृत्व में किया गया। इस संगोष्ठी को निदेशक उच्च शिक्षा हरियाणा द्वारा अनुमोदित किया गया था।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. कृष्णकांत गुप्ता ने की। कार्यक्रम का प्रारंभ दीपशिखा प्रज्वलन एवं पौधा भेंटकर अतिथियों के सत्कार के साथ हुआ। महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. कृष्णकांत गुप्ता जी ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि यह संगोष्ठी एक मंच प्रदान करेगी और इतिहासविदों, शोधकर्ताओं और छात्रों के बीच बातचीत समक्ष करेगी। संगोष्ठी का उद्देश्य भारतीय संस्कृति की महत्वता और चुनौतियों पर गंभीर मंथन व चिंतन कर इसके विभिन्न पक्षों व धाराओं पर चर्चा कर भविष्य में आने वाली बाधाओं से सुरक्षित करना रहा। उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय इतिहास विभाग से सेवानिवृत्त प्रोफेसर के.एल. टूटेजा जी रहे। जिन्होंने अपने संबोधन में कहा कि समकालीन समय में इतिहास, भारतीय संस्कृति की प्रासंगिकता और हमें इतिहास का अध्ययन क्यों और कैसे करना चाहिए। बीज वक्ता डॉ. प्रियतोष शर्मा, अध्यक्ष इतिहास विभाग पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ ऑनलाइन माध्यम से संबोधित करते हुए कहा कि उन्होंने "हिंदुस्तान (भारत)' के निर्माण में सामाजिक-सांस्कृतिक प्रतिमान 'एक अवलोकन' विषय पर ऑनलाइन मोड में बात की, जिसमें उन्होंने ऐतिहासिक कालखंडों और हर चीज पर सवाल उठाने के विचार का पता लगाया और यह भी कहा कि ईश्वर की अंतिमता तय नहीं थी। मिश्रित संस्कृति को समझने के लिए, उन्होंने महसूस किया कि कोई भी ग्रंथों का उल्लेख कर सकता है जिसे अंतिम व्याख्या के स्रोत के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि मठों की अवधारणा और मेलों और सामाजिक समारोहों के विचार के रूप में भी देखा जाना चाहिए। विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. जगदीश प्रसाद, सहायक निदेशक हरियाणा अकेडमी ऑफ हिस्ट्री एंड कल्चर, कुरुक्षेत्र ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। संगोष्ठी की विषय वस्तु और उद्देश्यों को संगोष्ठी के संयोजक व इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. जयपाल सिंह ने प्रस्तुत किया। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि भारतीय संस्कृति एक बहती हुई शक्तिशाली नदी की तरह है जो विभिन्न युगों में बदलती हुई वर्तमान युग में एकरूपता और सद्भावना का प्रतिबिम्ब रही है। विभिन्न विश्वविद्यालयों महाविद्यालयों के विशेषज्ञों इतिहासविदों और शिक्षाविदों की उपस्थिति में उद्घाटन समारोह संपन्न हुआ। प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ. महेंद्र सिंह एसोसिएट प्रोफेसर, दयानंद महाविद्यालय, हिसार ने की और आमंत्रित वार्ता डॉ. मनमोहन शर्मा सेवानिवृत्त प्रोफेसर, इतिहास विभाग बाबा मस्तनाथ यूनिवर्सिटी, रोहतक। उन्होंने विस्तार से बताया कि उन्होंने "प्राचीन भारत में समकालिक मूर्तियां और समग्र संस्कृति" विषय पर बात की, जिसमें उन्होंने भारत के कई हिस्सों में पाई जाने वाली विभिन्न मूर्तियों और पूरे भारत में प्रचलित संस्कृतियों का हवाला दिया।